

सुबोध
पोकेट बुक्स

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

प्रारम्भिक ज्योतिष



ज्योतिष-शास्त्र कोई अलौकिक विद्या नहीं है और न यह कोई दैवी चमत्कार है ।

ज्योतिष भी एक विज्ञान है

उसी तरह

जैसे साइंस में दो और दो चार होते हैं ।



आप स्वयं इस योग्य बन सकते हैं कि जन्म-कुण्डली बना सकें और अपने परिवार के भविष्य के ज्ञाता बन सकें ।



डा० नारायण दत्त श्रीमाली की अन्य पुस्तकें

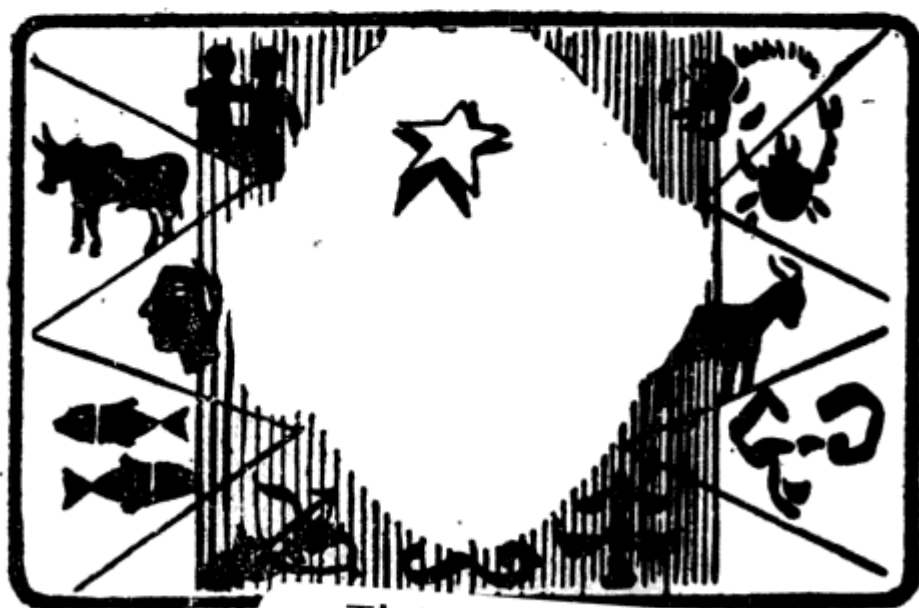
- सुबोध हस्तरेखा
- सुबोध स्वप्न ज्योतिष
- सुबोध मुहूर्त ज्योतिष
- सुबोध अंक विद्या



सुबोध पॉकेट बुक्स दिल्ली

नारायणदत्त श्रीमाली

सुबोध प्रारम्भिक ज्योतिष



This One



CNFN-8QE-CTFT Copyrighted material

सुबोध पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली-२
(१९७८)

ISBN: 978-81-7078-044-1

Rs 100.00

Subodh Prarambhih Jyotish
by : Dr. N. D. Shrimali

प्रकाशक

सुबोध पॉकेट बुक्स

२ दरियागंज,

नई दिल्ली-११०००२

संस्करण : १९८७

मुद्रक गायत्री आफसेट प्रेस,

लाजपत नगर, नई दिल्ली

दो शब्द

ज्योतिष भूत, भविष्य और वर्तमान की साकार कहानी है। भविष्य कैसा है और उसे किस प्रकार सँवारना है, इसकी जानकारी ज्योतिष ही दे सकता है।

पाठकों की काफी समय से एक ऐसी पुस्तक की माँग थी, जो सरल हो, सुबोध हो और जिससे अनजान व्यक्ति भी ज्योतिष सीख सके, लग्न निकालकर अपनी कुण्डली बना सके। इस पुस्तक में अत्यन्त सुबोध शैली में इस पूरे विषय को अत्यन्त सरलता से समझाया गया है।

मेरी अन्य पुस्तकों की तरह पाठक इसे भी हाथों-हाथ उठायेंगे, इसका तो मुझे विश्वास है ही, और यदि यह पुस्तक पाठकों की ज्ञानवृद्धि कर सकी, तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

सी/एफ-१४, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज०)

} नारायणदत्त श्रीमाली

विषय सूची

क्रम-अध्याय	विषय	पृष्ठ से पृष्ठ
१. प्रवेश		११—२०
	ज्योतिष-विज्ञान, इसकी महत्ता, इसका कार्य-क्षेत्र । काल-विभाजन, काल-विभाजन के भेद । दिन के भेद । दिन के तीन भेद । पाँच भेद । मास । मास भेद । दिनमान । घटी-पल । मुहूर्त । दिन के पन्द्रह मुहूर्त, उसके स्वामी । रात्रि के पन्द्रह मुहूर्त, उसके स्वामी । संवत्सर । साठ संवत्सरो का फलित ज्योतिष में उपयोग ।	
२. वार, तिथि		२१—२६
	वार, वार-नाम । होरा । होरा नाम की उत्पत्ति । वारों का क्रम । क्रम पढ़ने के पीछे रहस्य । वार- स्वभाव-संज्ञा—फल विशेष । वार स्वामी, कष्ट दिवस, वार कष्टावली । कष्ट शान्त्यर्थ दान । तिथि । तिथि का तात्पर्य । तिथियों का क्रम । तिथियों के नाम । तिथियों के प्रसिद्ध संबोधनवाची नाम । तिथियों के स्वामी । तिथियों की संज्ञाएँ । नन्दा, भद्रा, जया, रिवता, पूर्णा तिथियाँ । सिद्धा तिथियाँ । मृतसंज्ञक तिथियाँ । अघम तिथियाँ । दग्ध तिथियाँ । विषावत तिथियाँ । हुताशन तिथियाँ । मास-शून्य तिथियाँ । पक्ष-रन्ध्र तिथियाँ । मन्वादि तिथियाँ । युगादि तिथियाँ । निष्कर्ष ।	
३. नक्षत्र		३०—५५
	नक्षत्र । नक्षत्रों की स्थिति । नक्षत्रों के नाम । मानव- शरीर में नक्षत्रों की स्थिति । नक्षत्रों के संस्कृत- पर्यायवाची नाम । नक्षत्रों के सांकेतिक अक्षर ।	

नक्षत्रों के स्वामी । गुण भेद नक्षत्र—सात्विक, राजस, तामस नक्षत्र । लिंग भेद नक्षत्र—पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग नक्षत्र । स्थिर संज्ञक नक्षत्र । चर संज्ञक नक्षत्र । उग्र संज्ञक नक्षत्र । मिश्र संज्ञक नक्षत्र । लघु संज्ञक नक्षत्र । मृदु संज्ञक नक्षत्र । दारुण संज्ञक नक्षत्र । अधोमुख संज्ञक नक्षत्र । ऊर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र । तिर्यङ्मुख संज्ञक नक्षत्र । दग्ध संज्ञक नक्षत्र । पंचक संज्ञक नक्षत्र । मूल संज्ञक नक्षत्र । ध्रुव संज्ञक नक्षत्र । मास-शून्य नक्षत्र । गण्ड नक्षत्र । मूल नक्षत्र, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, रेवती, अश्विनी—प्रति नक्षत्र चरण फल । नक्षत्र—ग्रहस्वामी । नक्षत्र चरणाक्षर । नक्षत्र राशिचक्र । राशि सम्बन्धित नक्षत्र । नक्षत्र—योनि, गण, युंजा, नाडी, तारा संख्या, वर्ण । नक्षत्र कष्ट—प्रतिनक्षत्र-चरण-कष्ट, कष्ट-दिन, जपसंख्या, जप-मंत्र ।

४. योग

५६—७२

योग । योग अर्थ । योग भेद । योगों के नाम । योग-स्वामी । योग-सांकेतिक अक्षर । शुभ कार्य में त्याज्य योग । विशेष योग—चर, क्रकच, दग्ध, मृत्यु-दायक, सिद्धि, उत्पात, मृत्यु, काल, सुसिद्धि, यमदंष्ट्र योग, यमघंट, मूसल, अमृतसिद्धि, सर्वार्थसिद्धि योग । चतुर्दश योग चक्र । प्रमुख अट्ठाइस योग । प्रमुख योग चक्र । योग शुभाशुभ । शुभ कार्यों में वर्जित, भद्रा । भद्रा-निवास ।

५. करण

७१—७४

करण । करण नाम । चर संज्ञक करण । स्थिर संज्ञक करण । भद्रा । करणों के स्वामी ।

६. पंचांग-परिचय

७५—७७

पंचांग—तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण । पंचांग को समझने का तरीका । निष्कर्ष ।

ग्रह । ग्रहों के प्रमुख नाम । प्रत्येक ग्रह की विशेष-
ताएँ । फ़ारसी नाम । अंग्रेज़ी नाम । एकपाद-
दृष्टि । द्विपाद दृष्टि । त्रिपाद दृष्टि । सम्पूर्ण
दृष्टि । ग्रह-वर्ष । नेष्ट ग्रहस्य उपाय । एक राशि-
मुक्त प्रमाण । रत्न । मित्र ग्रह । समग्रह । शत्रु
ग्रह । उच्च राशि । नीच राशि । स्वगृह । मूल-
त्रिकोण । वर्ष । जाति । आकार । समय । दिशा ।
धातु । पाद । स्वभाव । गुण । व्यवहार । रस ।
भूमि । शरीर । अवस्था । रंग । धातु । स्थान ।
विशोत्तरी दशा-वर्ष । अष्टोत्तरी दशा-वर्ष । कारक
ग्रह । अरिष्टकारक ग्रह । ग्रह बल वृद्धि । ग्रह
जपनीय मंत्र ।

८. राशि

६६—११०

राशि । राशि का अर्थ । प्रसिद्ध राशियाँ । पर्याय-
वाची शब्द । मानव-शरीर में राशियों की स्थिति ।
राशि-परिचय । अंग्रेज़ी नाम । फ़ारसी नाम ।
अरबी नाम । राशि-नाम । लिंग । चरादि ।
तत्त्व । अवयव । पाद । वर्ण । गुण । धातु । शब्द ।
स्थान । क्रूरादि । बल । समादि । दिशा । स्त्रीसंग ।
कांति । जाति । उदय । ऋतु । राशि-स्वामी ।
घातचक्र प्रत्येक राशि-घात । मास । तिथि ।
वार । नक्षत्र । योग । करण । प्रहर । लग्न ।
चन्द्र । मंगल । बुध । गुरु । शुक्र । शनि । राहु ।
सूर्य । स्त्री-घात चन्द्र ।

९. भाव

१११—११६

भाव । जन्मकुण्डली । लग्न । केन्द्र । पणफर ।
आपोक्लिप्त । त्रिकोण । चित्रिकोण । चतुरस्र ।
उपचय । पीडर्क्ष । कण्टक । चतुष्टय । द्वादश भाव ।
भाव स्वामी नाम । भावों के अंग्रेज़ी नाम । संस्कृत-
पर्यायवाची । भावों के स्वामी के पर्यायनाम ।
प्रत्येक भाव से क्या-क्या जाना जाता है । निष्कर्ष ।

१०. सारिण्याँ

११७—१२८

स्टैण्डर्ड टाइम । स्थानीय समय । भारत के प्रसिद्ध शहरों के अक्षांश, रेखांश व स्टैण्डर्ड अन्तर मिनटों-सैकण्डों में । वेलान्तर-सारिणी । लग्न-सारिणी ।

११. लग्न

१२९—१३५

लग्न क्या है ? लग्न निकालने का सुगम तरीका । इष्टकाल-ज्ञान । विभिन्न समयों के इष्टकाल निकालने के नियम । इष्टकाल से लग्न निकालना । उदाहरण । जन्मकुण्डली-निर्माण । निष्कर्ष ।

१२. ज्ञातव्य

१३६—१४०

जन्मराशि प्रधानता । नामराशि प्रधानता । दिशा-शूल वास । योगिनी विचार । चंद्रवास-फल । दिशा-शूल परिहार । कालराहु विचार । धरतीशयन । रजस्वला धरती । वर्ग-विचार । वैर-मित्र । पाया-विचार । चौघटिका । भद्रा-निवास । निष्कर्ष ।

१३. जन्म-पत्रिका लिखने का प्रकार

१४१—१४२

१४. विविध मुहूर्त

१४३—१४७

सूतिका स्नान । अन्नप्राशन । कर्णवेध । विद्यारम्भ । वाग्दान । विवाह । वधू-प्रवेश । यात्रा । गृहारम्भ । नूतन गृह प्रवेश । शान्ति-कार्य । दुकान करना । व्यापार-प्रारम्भ । अधिकारी से मिलना । नौकरी । मुकद्दमा । मंत्रसिद्धि । समस्त शुभकार्य । मन्दिर-निर्माण । प्रतिष्ठा-कार्य । होमाहुति । गोद लेना । बँटवारा । बीज बोने का मुहूर्त ।

: १ :

प्रवेश

ज्योतिष भारतीय जीवन का आधार है। वेदों में इसे पाँचवाँ वेद और शास्त्रों में इसे नेत्र माना गया है, जिसका सीधा-सादा तात्पर्य है कि मानव-शरीर में नेत्रों का महत्त्व सर्वोपरि है। नेत्र प्राणी का तादात्म्य अखिल विश्व से कराते हैं, तथा व्यक्ति को ऊबड़-खाबड़ मार्ग में सावधानी से बचाकर गन्तव्य तक पहुँचाने में सहायक होते हैं। ठीक उसी प्रकार ज्योतिष की जानकारी रखने-वाला व्यक्ति भी जीवन के ऊबड़-खाबड़ क्षणों, विपरीत परिस्थितियों एवं अज्ञात आशंकाओं में से सकुशल बाहर निकलकर अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होता है।

ज्योतिष केवल कपोल-कल्पित कल्पना नहीं, अपितु ठोस सत्य है; यह मात्र विश्वास और श्रद्धा कर लेनेवाला शास्त्र ही नहीं, अपितु निश्चित परिणाम-सम्पन्न पूर्ण विज्ञान है। जिस प्रकार विज्ञान का निर्णय एक और सत्य है, उसी प्रकार ज्योतिष का भी; उदाहरणार्थ विज्ञान के अनुसार हाइड्रोजन की दो मात्रा तथा ऑक्सीजन की एक मात्रा मिलने से पानी बन जाता है, यह सिद्धांत भारत में भी उतना ही सत्य है जितना अमेरिका में; ठीक इसी प्रकार ग्रहों के संयोग-वियोग, पारस्परिक आकर्षण-विकर्षण से जो प्रभाव होता है, उसका एक निश्चित फल है, सुनिश्चित परिणाम है। कालभेद और स्थानभेद का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इनका परिणाम चाहे भारत हो, चाहे इंग्लैंड या अमेरिका, एक ही

फल होगा, एक ही परिणाम होगा और एक ही उसका मान होगा ।

ज्योतिष कोई कठिन और दुस्साध्य विद्या नहीं, अपितु अत्यन्त सीधा-सादा सरल विषय है । काफी वर्षों तक यह विद्या एक वर्ग-विशेष के ही पास रही और पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे चलती रही, जिसके कारण इसमें एकान्तता और सड़ांध-सी उत्पन्न हुई; इसे न तो खुला वातायन मिला, और न ही उन्मुक्त वातावरण । पिता प्रतिभाशाली होने पर पुत्र भी उतना ही प्रतिभाशाली हो यह ज़रूरी नहीं, इसी कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी होने के कारण इसमें अज्ञानता बढ़ती रही और अज्ञानता ने गप्पबाज़ी एवं लच्छेदार बातों का आश्रय ले लिया; भविष्य के सुनहरी ख्वाब दरसाए जाने लगे; साथ ही आगे जाकर इसमें ऐसे व्यक्तियों का दखल रह गया, जो इसके ठोस जानकार कम और भविष्य के ताने-बाने बुनने में अधिक कुशल थे ।

स्पष्ट है, यह काल ज्योतिष-जगत् में संक्रान्ति-काल था । अध-कचरे एवं अल्पशिक्षित पंडितों का बाहुल्य हो गया । जो वास्तविक जानकार थे, वे 'आउट ऑफ़ डेट' कहला दिये गए । इससे जनता और ज्योतिष दोनों की हानि ही हुई । जनता विज्ञापन एवं व्यक्तित्व की ओर झुकी और उसने जब फलादेश प्राप्त किया, तो वह भविष्य की शिला पर ठोस न रह सका क्योंकि उसकी नींव कमज़ोर थी । यह नींव उन अधकचरे पंडितों द्वारा निर्मित थी, जिन्हें केवल नौ ग्रह और बारह राशियों का ही नाम स्मरण था, 'इसके आगे न उनकी पहुँच थी, और न आवश्यकता ही ।

जब एक का फलादेश सही नहीं उतरा तो जनता दूसरे के पास गई । वहाँ भी वही हाल हुआ तो तीसरे के पास गई, और इस प्रकार जब आठ-दस लोगों के पास जाने पर भी ठोस सत्य की उपलब्धि नहीं हुई हुई तो खीझकर उसने ज्योतिष को ही गप्पबाज़ी एवं कपोल-कल्पित ठहरा दिया ।

पर यह पाखण्ड तथा झूठी चमक-दमक ज्यादा समय तक नहीं

टिकी। जनता भी ऐसे पाखण्डियों को पहचान गई, और उन अध-
कचरे विद्वानों को भी अपना आसन हिलता नज़र आया। धीरे-
धीरे इन सबके बीच में से ठोस सत्य उभरता रहा। जो सही सुदृढ़
थे वही अडिग दिखाई दिये, और बालू की दीवारें ढहती गईं।
आज जनता को पहचान हो गई है। उसकी पुनः आस्था जमने लगी
है। उसके फेलादेश सही उतरने लगे हैं और ये सही फलादेश उन
पंडितों की विशेषता नहीं हैं; यह तो कालजयी ज्योतिष की सत्यता
है, निश्चित विज्ञान का परिणाम है, और उन आर्य ऋषियों की
उपलब्धि है जिन्होंने परिश्रमपूर्वक पूरे खगोल-मण्डल का अध्ययन
किया था—ग्रहों की गति, स्थिति एवं पथ का अध्ययन किया था,
उसका आयाम और व्यास नापा था तथा उसके बारे में निश्चित
सिद्धान्त स्थिर किये थे।

पिछले दिनों मेरे द्वारा जब ज्योतिषीय कम्प्यूटर का निर्माण
हुआ तो देश-विदेश से हजारों प्रशंसापूर्ण पत्र मिले। लगभग सभी
पत्र-पत्रिकाओं ने इसे सराहा, दैनिक 'नवभारत' ने जहाँ इसे
'ज्योतिष-जगत् में नया कीर्तिमान' बताया तो 'धर्मयुग' ने इसे
'ज्योतिषीय उपलब्धि' कहकर अभिनन्दन किया। 'कादम्बिनी'
आदि कई हिन्दी, मराठी, गुजराती पत्र-पत्रिकाओं ने इसपर विशेष
लेख प्रकाशित किये और यह बताया कि "इससे किसी भी व्यक्ति
का, किसी भी क्षण-विशेष का भविष्य स्पष्ट किया जा सकता है।"

और यह इस बात का प्रमाण है कि ज्योतिष ध्रुव सत्य है।
उससे उत्पन्न फलादेश निश्चित ही सत्य है। आवश्यकता है परि-
श्रम की, शोध की, और आगे बढ़कर कुछ कर गुज़रने की क्षमता
की। इस यंत्र-निर्माण का श्रेय, मेरा श्रेय नहीं, अपितु उन ऋषियों
का है जिन्होंने ग्रहों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन किया, ग्रहों व
मनुष्यों का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया और इसके लिए
निश्चित सिद्धान्त स्थिर किये, अस्तु।

ज्योतिष सीखने के इच्छुक व्यक्ति को चाहिए कि वह काल-

विभाजन को समझे । आजकल काल-विभाजन घण्टा, मिनट, सेकंड है किन्तु भारतीय गणितज्ञों ने काल-विभाजन दिन, घटी, पल में किया था । यह विभाजन इस प्रकार है —

३ लव	=	१ निमेष
३ निमेष	=	२ क्षण
५ क्षण	=	१ काष्ठा
१५ काष्ठा	=	१ लघु
१५ लघु	=	१ घड़ी
६० घड़ी	=	१ दिन

इन घटी-पलों को आधुनिक काल-विभाजन में इस प्रकार समझा जा सकता है—

१ घटी	=	२४ मिनट
१ मिनट	=	२३ पल
१ पल	=	६० प्रतिपल या २४ सेकंड
१ प्रतिपल	=	६० विप्रतिपल या $\frac{१}{१५०}$ सेकंड

इस काल-विभाजन से ही ज्ञात हो जाता है कि प्राचीन ज्योतिर्विदों की गणना या काल-मापन सैकण्ड के भी सूक्ष्म में गई हुई थी ।

वस्तुतः कालपद्धति के आविष्कर्ता भारतीय ही थे । दिन-रात के लिए संस्कृत में 'अहोरात्र' शब्द प्रयुक्त होता है । मुख-मुख पद्धति के अनुसार प्रथम तथा अन्तिम अक्षर का त्याग कर ज्योतिष में 'होरा' शब्द स्वीकार किया । अहोरात्र के चौबीसवें भाग को 'होरा' कहा गया, जो एक घण्टे का द्योतक है, और यही 'होरा' शब्द अंग्रेजी में 'आवर' (Hour) शब्द बना, जो एक घण्टे का ही पर्यायवाची है ।

उपर्युक्त काल-विभाजन के साथ ही अग्रांकित शब्दों को भी ध्यान में रखना चाहिए—

३० काष्ठा	=	१ कला
३० कला	=	१ क्षण
१२ क्षण	=	१ मुहूर्त
३० मुहूर्त	=	१ अहोरात्र
दिन-रात्रि का १५वां भाग	=	१ मुहूर्त
पूर्वाह्न	=	प्रातः से दोपहर तक
अपराह्न	=	दोपहर से सायं तक

दिन की लम्बाई के तीन भाग	{	पूर्वाह्न मध्याह्न अपराह्न
दिन की लम्बाई चार भाग	{	पूर्वाह्न मध्याह्न अपराह्न सायाह्न
दिन की लम्बाई के पाँच भाग	३ मुहूर्त तक =	प्रातःकाल
	६ " "	=संगव
	९ " "	=मध्याह्न
	१२ " "	=अपराह्न
	१५ " "	=सायाह्न

१ याम=दिन का चौथा भाग या एक प्रहर

इसके अतिरिक्त भारतीय काल-गणना में कुछ विशिष्ट नाम भी प्रचलित हैं—

प्रातः=सूर्योदय से तीन घटी तक

सायं=सूर्यास्त से तीन घटी तक

प्रदोष=सूर्यास्त से छः घटी तक

निशीथ=अर्द्धरात्रि के मध्य की दो घटी

उषाकाल=सूर्योदय से पूर्व पाँच घटी

३५ अहोरात्र=१ पक्ष

२ पक्ष=१ मास

२ मास = १ ऋतु

६ ऋतु या १२ मास = १ वर्ष

६ मास = १ अयन

सूक्ष्मता में जाने पर कई मास ज्ञात होते हैं—

१ चान्द्रमास = (पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावास्या तक । यह २९ दिन १२ घंटा ४४ मिनट ३ सैकण्ड का होता है ।)

सौर मास = (सूर्य की एक राशि या ३० अंश भ्रमण का काल)

१ सावन मास = ३० दिन

१ नाक्षत्र मास = चन्द्रमा का एक पूर्ण भ्रमण या २७ दिन ७ घंटा ४३ मिनट ८ सैकण्ड ।

मास की तरह वर्ष भी पाँच प्रकार के माने जाते हैं—

१२ चान्द्रमास = १ चान्द्र वर्ष

१ सौर वर्ष = ३६५.२५६ दिन

१ सावन वर्ष = ३६० दिन

१ नक्षत्र वर्ष = १२ नक्षत्र मास

१ चान्द्र वर्ष = ३५४.३० दिन

१ बार्हस्पत्य वर्ष = ३६१ सौर दिन

ऊपर देखने पर पता चलता है कि चान्द्र वर्ष ३५४.३० दिन का होता है, जबकि सौर वर्ष ३६५.२५६ दिन का । इस असंगति को मिटाने के लिए वेदांग ज्योतिष में ढाई वर्षों के अन्तर से एक चान्द्र मास और बढ़ा देने की परम्परा है, जिसे अधिमास, या अधिक मास भी कहते हैं ।

प्रत्येक पंचांग में दिनमान लिखा हुआ होता है । एक अहोरात्र ६० घटी का होता है । इसमें जितना दिनमान होता है, ६० घटी में से घटाने पर शेष रात्रिमान कहलाता है । उदाहरणार्थ दिनमान ३४ घटी १२ पल है, तो इसे ६० में से घटाने पर—

६०—००

३४—१२

२५—४८ शेष

अर्थात् ३४ घटी १२ पल दिनमान है, तो उस दिन २५ घटी ४८ पल रात्रिमान होगा।

‘मुहूर्त’ शब्द भारतीय ज्योतिष में काफी प्रचलित है तथा शुभ कार्यों के प्रारम्भ-हेतु शुभ मुहूर्त का अध्ययन किया जाता है।

पर प्रश्न उठता है कि मुहूर्त का काल-मापन क्या?

ज्योतिष-सिद्धान्त के अनुसार १५ मुहूर्त दिन में होते हैं, तथा १५ मुहूर्त रात्रि में। दिन-रात में कुल ३० मुहूर्त होते हैं।

दिनमान में १५ का भाग देने से एक मुहूर्त का काल स्पष्ट हो जाता है। उदाहरणार्थ किसी दिन दिनमान ३४ घटी १२ पल है, इसमें १५ का भाग दिया—

१५) ३४—१२ (२ घटी

३०

४

+ ६० पल बनाये

२४०

+ १२ पल जोड़े

१५) २५२ (१६ पल

१५

१०२

६०

१२ शेष

अर्थात् उस दिन एक मुहूर्त की समयावधि लगभग २ घटी १६ पल (या १७ पल, या सही लें तो २ घटी १६.८ पल) थी।

यह पीछे ही बताया जा चुका है कि एक घटी = २४ मिनट और एक पल = २४ सैकण्ड का होता है। इस प्रकार उस दिन एक मुहूर्त की समयावधि लगभग ५४ मिनट २४ सैकण्ड की थी।

दिन के जो पन्द्रह मुहूर्त होते हैं उसके स्वामी इस प्रकार माने गए हैं—

मुहूर्त	स्वामी	मुहूर्त	स्वामी
पहला	गिरीश	नवाँ	विधाता
दूसरा	भुजंग	दसवाँ	इन्द्र
तीसरा	मित्र	ग्यारहवाँ	इन्द्रानल
चौथा	पितृ	बारहवाँ	निकृति
पाँचवाँ	वसु	तेरहवाँ	वरुण
छठा	अम्बु	चौदहवाँ	अर्यमा
सातवाँ	विश्वदेव	पन्द्रहवाँ	भग
आठवाँ	अभिजित्		

रात्रि के जो पन्द्रह मुहूर्त होते हैं, उनके स्वामी इस प्रकार कहे गये हैं—

मुहूर्त	स्वामी	मुहूर्त	स्वामी
पहला	शिव	नवाँ	शशमृद्
दूसरा	अजैकपाद्	दसवाँ	अदिति
तीसरा	अहिर्बुध्न्य	ग्यारहवाँ	जीव
चौथा	पूषा	बारहवाँ	विष्णु
पाँचवाँ	अश्विनी	तेरहवाँ	अर्क
छठा	यम	चौदहवाँ	त्वष्ट्रा
सातवाँ	अग्नि	पन्द्रहवाँ	मरुत्
आठवाँ	धातृ		

मुहूर्त व उसके स्वामी का ज्ञान होने के ही साथ संवत्सर का ज्ञान भी जरूरी है। कुल संवत्सर साठ हैं, जिनके क्रमशः नाम इस प्रकार हैं—

१ प्रभव

२ विभव

३ शुक्ल

४ प्रमोद	५ प्रजापति	६ अंगिरा
७ श्रीमुख	८ भाव	९ युवा
१० घाता	११ ईश्वर	१२ बहुधान्य
१३ प्रमार्थी	१४ विक्रम	१५ वृष
१६ चित्रभानु	१७ सुभानु	१८ तारण
१९ पार्थिव	२० व्यय	२१ सर्वजित्
२२ सर्वधारी	२३ विरोधी	२४ विकृति
२५ खर	२६ नन्दन	२७ विजय
२८ जय	२९ मन्मथ	३० दुर्मुख
३१ हेमलम्बी	३२ विलम्बी	३३ विकारी
३४ शार्वरी	३५ प्लव	३६ शुभकृत
३७ शोभकृत	३८ क्रोधी	३९ विश्वावसु
४० पराभव	४१ प्लवंग	४२ कीलक
४३ सौम्य	४४ साधारण	४५ विरोधकृत
४६ परिधावी	४७ प्रमाथी	४८ आनन्द
४९ राक्षस	५० नल	५१ पिंगल
५२ कालयुक्त	५३ सिद्धार्थी	५४ रौद्र
५५ दुर्मति	५६ दुन्दुभि	५७ रुधिरोग्दगारी
५८ रक्ताक्षी	५९ क्रोधन	६० क्षय

प्रत्येक वर्ष एक विशेष संवत्सर रहता है, जिसका उल्लेख प्रत्येक शुभकार्य या संकल्प के साथ किया जाता है। किस वर्ष कौन-सा संवत्सर है, इसको जानने की विधि यह है—

शक वर्ष को दो स्थानों पर लिखो। एक स्थान पर २२ से गुणा कर ४२९१ जोड़ो, तथा उसमें १८७५ का भाग दो। जो लब्धि हो उसको दूसरे स्थान पर लिखे शक वर्षों में जोड़कर साठ का भाग देने से शेष जो बचे उसमें एक जोड़ देने से संवत्सरादि क्रम में संवत्सर होगा। उदाहरणार्थ—संवत् २०२८ में शक वर्ष १८९३ है (जो प्रत्येक पंचांग पर लिखा होता है)—

$$\begin{array}{r}
 १८६३ \\
 \times २२ \\
 \hline
 ४१६४६ \\
 + ४२६१ \\
 १८७५) ४५६३७ (२४ \\
 \underline{३७५०} \\
 ८४३७ \\
 \underline{७५००} \\
 ६३७ \text{ त्याज्य}
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 १८६३ \\
 + २४ \\
 \hline
 ६०) १६१७ (३१ \\
 \underline{१८०} \\
 ११७ \\
 \underline{६०} \\
 ५७ \\
 \underline{+ १} \\
 ५८
 \end{array}$$

अर्थात् संवत्सरादि क्रम में ५८वाँ संवत्सर 'रक्ताक्षी' है, अतः संवत् २०२८ या शक वर्ष १८६३ 'रक्ताक्षी' संवत्सर कहलाएगा। संवत्सर का फलित ज्योतिष में भी काफी महत्त्व माना गया है।

: २ :

वार, तिथि

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में सात वार माने गये हैं, जिनका क्रम इस प्रकार है—

- १ रविवार या इतवार
- २ सोमवार या चन्द्रवार
- ३ मंगलवार
- ४ बुधवार
- ५ गुरुवार या बृहस्पतिवार
- ६ शुक्रवार
- ७ शनिवार

प्रश्न उठता है कि यह वारों का क्रम किस प्रकार बना ? क्या यह यों ही है, या इसके पीछे भी निश्चित सिद्धान्त है ?

उत्तर में निवेदन है कि वारों का यह क्रम भारतीयों की देन है, और इसके पीछे एक निश्चित सिद्धान्त है ।

पृथिवी के सबसे निकट ग्रह चन्द्रमा है, उससे दूर क्रमशः बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, गुरु तथा शनि हैं । उनमें सर्वाधिक तेजस्वी ग्रह सूर्य है, अतः प्रलय के उपरान्त ऋषियों ने पहली होरा सूर्य की ही मानी ।

दिन-रात में २४ होरा होती हैं । ग्रह-क्रम से गणना करने पर २५वीं होरा पर जब सूर्योदय होगा तो वह होरा चन्द्रमा की होगी ।
उदाहरणार्थ—

सूर्य	—	१	८	१५	२२
शुक्र	—	२	९	१६	२३
बुध	—	३	१०	१७	२४
चन्द्र	—	४	११	१८	२५
शनि	—	५	१२	१९	
गुरु	—	६	१३	२०	
मंगल	—	७	१४	२१	

पहली होरा सूर्य की मानकर चलें, तो २५वीं होरा चन्द्रमा की आई। चन्द्रमा से फिर गणना की तो २५वीं होरा मंगल की आई। इसी प्रकार क्रम से सूर्य के बाद चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि की होराएँ आईं। एतदर्थ वारों का क्रम भी इसी प्रकार रहा।

इस प्रकार सूक्ष्मता से देखने पर पता चलता है कि वारों का जो क्रम रखा है, उसके पीछे भी ठोस वैज्ञानिक आधार है।

जो वार होता है, उसका अधिपति भी वही ग्रह होता है, अर्थात् रविवार का स्वामी सूर्य, सोमवार का स्वामी चन्द्र, मंगलवार का स्वामी मंगल, आदि इसी प्रकार समझना चाहिए।

नीचे वार-नाम, उनकी संज्ञा, स्वभाव तथा फल स्पष्ट किया जा रहा है—

क्रम	वार	स्वभाव	संज्ञा	फल-विशेष
१	रविवार	क्रूर	स्थिर	गायनादि के लिए
२	सोमवार	सौम्य	चर	शुभ कार्य हेतु
३	मंगलवार	क्रूर	उग्र	जुआ आदि हेतु
४	बुधवार	सौम्य	सम	व्यापारादि के लिए
५	गुरुवार	सौम्य	मृदु	विद्यारंभ हेतु
६	शुक्रवार	सौम्य	मृदु	वाद-विवाद हेतु
७	शनिवार	क्रूर	तीक्ष्ण	चिकित्सा हेतु

उपर्युक्त चक्र देखने से यह स्पष्ट होता है कि रविवार क्रूर

स्वभाव का होता है तथा स्थिर प्रकृति का है। यह वार गायन आदि कार्य प्रारंभ करने के लिए शुभ है। इसी प्रकार सोमवार सौम्य स्वभाव तथा चर प्रकृति का होने के साथ-साथ किसी भी शुभ कार्य को प्रारंभ करने हेतु श्रेष्ठ माना जाता है।

इसके साथ ही वार-कष्टावली भी स्पष्ट की जा रही है—

वार	वार-स्वामी	कष्ट-दिवस	दान
रविवार	शिव	५	दुग्धदान
सोमवार	गौरी	८	भोजनदान
मंगलवार	स्कन्द	५	दुग्धदान
बुधवार	विष्णु	७	अन्नदान
गुरुवार	ब्रह्मा	५	घृत-पक्वान्नदान
शुक्रवार	इन्द्र	७	मधुदान
शनिवार	यम	१५	माषान्नदान

ऊपर चक्र में यह स्पष्ट है कि यदि कोई व्यक्ति या बालक रविवार को बीमार पड़े, तो उसे शिव-स्मरण करना चाहिए। उनका रोग-कष्ट लगभग पाँच दिन तक रहेगा तथा शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ हेतु उसे दूध का दान देना चाहिए। इसी प्रकार अन्य वारों में भी समझना चाहिए।

चन्द्रमा की एक कला को तिथि कहा जाता है। इसका सूर्य और चन्द्रमा के अन्तरांशों पर मान निकाला जाता है। अमावस्या से पूर्णिमा तक की तिथियाँ शुक्ल पक्ष की तथा पूर्णिमा से अमावस्या तक की तिथियाँ कृष्ण पक्ष की तिथियाँ कही जाती हैं।

तिथियों को १, २, ३ आदि अंकों से सूचित करते हैं, अर्थात् १ का अर्थ एकम या प्रतिपदा, २ का अर्थ द्विज या द्वितीया, इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए। पूर्णिमा को १५ की संख्या से सूचित करते हैं, तथा अमावस्या को ३० के अंक से।

मुस्लिम पद्धति, गुजरात आदि में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महीने का प्रारंभ मानते हैं, इस प्रकार पुनः अमावस्या आने पर

तीस तिथियाँ व्यतीत हो जाती हैं, इसीलिए अमावस्या को ३० की संज्ञा से विभूषित करते हैं। ज्योतिष-शास्त्र में भी तिथियों की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से की जाती है।

नीचे तिथियों के सूचक-ग्रन्थ एवं उनके संबोधनवाची नाम दिये जा रहे हैं—

तिथियाँ	प्रसिद्ध सम्बोधनवाची नाम
१	एकम, प्रतिपदा
२	द्वज, द्वितीया
३	तीज, तृतीया
४	चौथ, चतुर्थी
५	पाँचम, पंचमी
६	छठ, षष्ठी
७	सातम, सप्तमी
८	आठम, अष्टमी
९	नम, नवमी
१०	दशम, दशमी
११	ग्यारस, एकादशी
१२	बारस, द्वादशी
१३	तेरस, त्रयोदशी
१४	चवदस, चतुर्दशी
१५	पूनम, पूर्णिमा
३०	अमावस, अमावस्या

तिथियों को सम्झने के उपरान्त तिथियों के स्वामी पर भी विचार कर लेना आवश्यक है। प्रत्येक तिथि का अधिपति एक-एक देवता है जिन्हें तिथियों के स्वामी भी कह सकते हैं। वे इस प्रकार हैं—

तिथियों के स्वामी

तिथियाँ	स्वामी	तिथियाँ	स्वामी
१	अग्नि	६	दुर्गा
२	ब्रह्मा	१०	काल
३	गौरी	११	विश्वदेव
४	गणेश	१२	विष्णु
५	शेष	१३	कामदेव
६	कार्तिकेय	१४	शिव
७	सूर्य	१५	चन्द्रमा
८	शिव	३०	पितृदेव

जिन तिथियों के जो स्वामी हैं, उन देवताओं की पूजा या प्रतिष्ठा आदि उन्हीं तिथियों में करने से विशेष शुभदायक होता है।

ज्योतिष-क्षेत्र में प्रवेश करने से पूर्व तिथियों के बारे में कुछ और जानकारी भी जरूरी है।

तिथियों की संज्ञाएँ

कुल पन्द्रह तिथियों को पाँच भागों में बाँटा गया है, जिनके नाम नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा हैं।

१	६	११	तिथियों का नाम 'नन्दा' है।		
२	७	१२	"	"	" 'भद्रा' है।
३	८	१३	"	"	" 'जया' है।
४	९	१४	"	"	" 'रिक्ता' है।
५	१०	१५ या ३०	"	"	" 'पूर्णा' है।

शुभ कार्य में भी ये तिथियाँ शुक्ल पक्ष में अघम, मध्यम तथा उत्तम एवं कृष्ण पक्ष में उत्तम, मध्यम तथा अघम होती हैं। नीचे के चक्र से यह भली-भाँति समझा जा सकता है।

शुक्ल पक्ष में—	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
अघम	१	२	३	४	५

मध्यम	६	७	८	९	१०
उत्तम	११	१२	१३	१४	१५

कृष्ण पक्ष में

	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
उत्तम	१	२	३	४	५
मध्यम	६	७	८	९	१०
अधम	११	१२	१३	१४	१५

अर्थात् शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा अधम, शुभ कार्यों में वर्ज्य, षष्ठी मध्यम तथा एकादशी उत्तम है, जबकि ये तीनों ही तिथियाँ 'नन्दी' संज्ञा से विभूषित हैं। इसके विपरीत कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा शुभ कार्यों के लिए उत्तम, षष्ठी मध्यम तथा एकादशी अधम मानी गई है।

सिद्धा तिथियाँ

ऊपर उत्तम, मध्यम तथा अधम तिथियों को स्पष्ट किया, पर यदि दोनों ही पक्षों (कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष) में से किसी भी पक्ष में नन्दा तिथियों को शुक्रवार, भद्रा तिथियों को बुधवार, जया तिथियों को मंगलवार, रिक्ता तिथियों को शनिवार या पूर्णा तिथियों को गुरुवार हो तो उनका अशुभ दोष मिटकर वे सिद्ध, सफलतादायिनी एवं श्रेष्ठ तिथियाँ बन जाती हैं; स्पष्टता के लिए नीचे का चक्र प्रस्तुत है—

तिथि-संज्ञा	तिथियाँ	सम्बन्धित वार
नन्दा	१, ६, ११	शुक्रवार
भद्रा	२, ७, १२	बुधवार
जया	३, ८, १३	मंगलवार
रिक्ता	४, ९, १४	शनिवार
पूर्णा	५, १०, १५ या ३०	गुरुवार

मृतसंज्ञक तिथियाँ

मृतसंज्ञक तिथियाँ अशुभ होती हैं, तथा इनमें कोई भी शुभ

कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। रविवार को नन्दा, सोम को भद्रा, मंगल को नन्दा, बुध को जया, गुरु को रिक्ता, शुक्र को भद्रा, तथा शनि को पूर्णा तिथियाँ होने पर वे मृतसंज्ञक तिथियाँ कहलाती हैं। नीचे के चक्र में यह स्पष्ट है—

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	२	१	३	४	२	५
६	७	६	८	९	७	१०
११	१२	११	१३	१४	१२	१५
नन्दा	भद्रा	नन्दा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूर्णा

अधम तिथियाँ

शनिवार को षष्ठी, शुक्र को सप्तमी, गुरु को अष्टमी, बुध को प्रतिपदा एवं नवमी, मंगल को दशमी, सोम को एकादशी, रविवार को सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ होने पर वे अधम तिथियाँ कहलाती हैं। किसी भी प्रकार का शुभ कार्य इन तिथियों में वर्जनीय है—

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
तिथियाँ	{ ७ १२	११	१०	१ ९	८	७	६

दग्ध तिथियाँ—

रवि को १२, सोम को ११, मंगल को ५, बुध को ३, गुरु को ६, शुक्र को ८ तथा शनि को ९ तिथि हो तो वे दग्ध तिथियाँ कहलाती हैं। शुभ कार्यों में इन्हें छोड़ देना चाहिए।

विषाक्त तिथियाँ

रवि को ४, सोम को ६, मंगल को ७, बुध को २, गुरु को ८ तथा शनि को ७ तिथि होने पर वे विषाक्त या विष-तिथियाँ कहलाती हैं।

हुताशन तिथियाँ—

रवि को १२, सोम को ६, मंगल को ७, बुध को ८, गुरु को

६, शुक्र को १० तथा शनि को ११ तिथि होने पर वे हुताशन तिथियाँ कहलाती हैं।

विषाक्त तथा हुताशन तिथियाँ भी शुभ कार्यों में निषिद्ध मानी गई हैं।

आगे के चक्र में दग्ध, विषाक्त तथा हुताशन तिथियों को भली प्रकार समझाया है—

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दग्ध	१२	११	५	३	६	८	६
विषाक्त	४	६	७	२	८	६	७
हुताशन	१२	६	७	८	६	१०	११

मास-शून्य तिथियाँ—

मास-शून्य तिथियाँ ज्योतिष में शुभ नहीं मानी जातीं। ये इस प्रकार हैं—

मास	तिथियाँ
चैत्र	दोनों पक्षों की अष्टमी और नवमी।
वैशाख	दोनों पक्षों की द्वादशी।
ज्येष्ठ	कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी।
आषाढ़	कृष्ण पक्ष की षष्ठी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी।
श्रावण	दोनों पक्षों की द्वितीया और तृतीया।
भाद्रपद	दोनों पक्षों की प्रतिपदा और द्वितीया।
आश्विन	दोनों पक्षों की दशमी और एकादशी।
कार्तिक	कृष्ण पक्ष की पंचमी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी।
मार्गशीर्ष	दोनों पक्षों की सप्तमी और अष्टमी।
पौष	दोनों पक्षों की चतुर्थी और पंचमी।
माघ	कृष्ण पक्ष की पंचमी और शुक्ल की षष्ठी।

फाल्गुन

कृष्ण पक्ष की चतुर्थी और शुक्ल पक्ष की तृतीया ।

पक्ष-रन्ध्र तिथियाँ

चतुर्दशी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी और चतुर्दशी, ये पक्ष-रन्ध्र तिथियाँ कहलाती हैं । शुभ कार्य यथासंभव इन तिथियों से प्रारम्भ न करें ।

मन्वादि तिथियाँ—

चैत्र शुक्ला तृतीया और पूर्णमासी

कार्तिक शुक्ला द्वादशी व पूर्णमासी

आषाढ़ शुक्ला दशमी व पूर्णमासी

ज्येष्ठ की पूर्णमासी

फाल्गुन की पूर्णमासी

आश्विन शुक्ला नवमी

माघ शुक्ला सप्तमी

पौष शुक्ला एकादशी

भाद्रपद शुक्ला तृतीया

श्रावण कृष्णा अष्टमी व अमावस्या

उपर्युक्त मन्वादि तिथियाँ कहलाती हैं, एतदर्थ शुभ कार्य इन तिथियों में वर्ज्य हैं ।

युगादि तिथियाँ—

युगादि तिथियों में भी विवाहादि शुभ कार्य प्रारंभ नहीं करना चाहिए । तिथियाँ इस प्रकार हैं—

कार्तिक शुक्ला नवमी

वैशाख शुक्ला तृतीया

भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी

माघ कृष्णा अमावस्या

उपर्युक्त चारों तिथियाँ युगादि तिथियाँ कहलाती हैं ।

: ३ :

नक्षत्र

ताराओं का समूह नक्षत्र कहलाता है। किसी नक्षत्र में दो या तीन तारे होते हैं, तो किसी में सैकड़ों-हजारों। विभिन्न रूपों में तथा अश्व, सर्प आदि आकारों में जो तारापुंज दिखाई देते हैं, उन्हें ही नक्षत्रों की संज्ञा दी गई है।

समस्त आकाश-मण्डल को ज्योतिर्विदों ने सत्ताइस भागों में विभक्त कर दिया है, और प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रक्खा है। आकाश-मण्डल के किसी भी भाग को समझने के लिए नक्षत्रों का ही सहारा लिया जा सकता है; आकाश-मण्डल की दूरी भी नक्षत्रों से ही नापी जाती है।

उदाहरणार्थ यदि पूछा जाय कि दिल्ली में लालकिला कहाँ स्थित है तो अनजान-अपरिचित व्यक्ति को समझाने के लिए कहा जाएगा कि लालकिला चाँदनी चौक से इतने फर्लांग इस दिशा में दूर है। इस प्रकार कोई ग्रह कहाँ स्थित है, तो उसको समझाने के लिए कहा जाएगा कि अमुक ग्रह, अमुक नक्षत्र के इतने पास या दूर है। इस प्रकार बताने से ज्योतिर्विद् तुरन्त उस ग्रह की वास्तविक स्थिति समझ लेगा कि अमुक ग्रह आकाश-मण्डल में कहाँ पर स्थित है।

सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग कर लिये गये हैं, जिन्हें चरण कहा जाता है। सत्ताइस नक्षत्रों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

१ अश्विनी	२ भरणी
३ कृत्तिका	४ रोहिणी
५ मृगशिरा	६ आर्द्रा
७ पुनर्वसु	८ पुष्य
९ आश्लेषा	१० मघा
११ पूर्वा फाल्गुनी	१२ उत्तरा फाल्गुनी
१३ हस्त	१४ चित्रा
१५ स्वाति	१६ विशाखा
१७ अनुराधा	१८ ज्येष्ठा
१९ मूल	२० पूर्वाषाढ़ा
२१ उत्तराषाढ़ा	२२ श्रवण
२३ धनिष्ठा	२४ शतभिषा
२५ पूर्वा भाद्रपद	२६ उत्तरा भाद्रपद
२७ रेवती	

इन सत्ताइस नक्षत्रों के अतिरिक्त अभिजित् को अट्ठाइसवाँ नक्षत्र माना है। ज्योतिर्विदों के मतानुसार उत्तराषाढ़ा का उत्तरार्द्ध तथा श्रवण का पूर्वार्द्ध मिलाकर जो नक्षत्र बनता है वह 'अभिजित्' है। यह नक्षत्र प्रत्येक कार्य में शुभ माना गया है।

अभिजित् को मानने पर भी मुख्यतः सत्ताइस नक्षत्रों को ही मान्यता प्राप्त है।

मानव-शरीर को पूरा आकाश-मण्डल मानकर उसमें इन सत्ताइस नक्षत्रों की स्थिति गये मानी है। रुद्र-कृत 'होरा-शास्त्र' में इसका पूर्ण विवरण है। वह इस प्रकार है—

मानव-शरीर में नक्षत्र-स्थिति

क्रम	नक्षत्र	मानव-शरीर-भाग
१	अश्विनी	पैरों के ऊपरी भाग में
२	भरणी	पैरों के तलवे में
३	कृत्तिका	शिर में

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली



प्रारम्भिक ज्योतिष

आप भी ज्योतिषी बन सकते हैं !

आपके हाथ की यह पुस्तक
सुबोध प्रारम्भिक ज्योतिष

बहुत ही सरल एवं सुबोध

शैली में लिखी गई है ।

इसे पढ़कर लग्न निकालना, कुण्डली बनाना,
जन्मपत्री बनाना, मुहूर्त निकालना आदि-आदि
ज्योतिष की प्रक्रियाएँ आसानी से सीख सकते हैं ।

यह पुस्तक है

भारतीय ज्योतिष का क-ख-ग

भारत की सर्वश्रेष्ठ पॉकेट बुक्स



सुबोध पॉकेट बुक्स दिल्ली